फणीश्वरनाथ रेणु के कथा–साहित्य में गीतों की सार्थकता : एक अध्ययन

राँची विश्वविद्यालय, राँची के हिन्दी विभाग (मानविकी संकाय) में पीएच०डी० उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रारूप

2025

शोध–निर्देशक :

डॉ० हीरा नन्दन प्रसाद
एसोसिएट प्रोफेसर एवं पूर्व अध्यक्ष
हिन्दी विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची

शोधार्थी :

अस्मिता खलखो
(जे.आर.एफ.)
हिन्दी विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची

प्रस्तावना

हिन्दी साहित्य के इतिहास में आधुनिक युग से कथा–साहित्य का विकास आरंभ हुआ। भारतेंदु युग में गद्य–साहित्य को एक नई दिशा मिली। हिन्दी कथा–साहित्य में जिस प्रकार प्रेमचंद जी को कथा–सम्राट की उपाधि मिली है। उसी प्रकार फणीश्वरनाथ रेणु को प्रेमचंदोत्तर कथाकारों में आँचलिक कथाकार के रूप में सर्वाधिक चर्चा एवं प्रसिद्धि प्राप्त हुई।

मूल रूप से देखा जाए तो जिस प्रकार कृषक वर्ग के प्रति जो सहानुभूति हमें प्रेमचंद के 'गोदान' में मिलती है वैसी ही लोकगीत, लोकसंसकृति और आम जनता के प्रति संवेदना हमें रेणु जी के कथा–साहित्य में मिलती है। रेणु जी ने अपनी रचनाओं में लोकगीतों, लोकसंस्कृतियों, लोकभाषाओं, लोकोक्तियों, मुहावरों को विशेष स्थान दिया है, जो उनके कथा–साहिय को जीवंत और रंगीन बना देता है। लोकगीत हिन्दी साहित्य के महत्वपूर्ण अंग है। लोकगीत आम जनता की भावनाओं और संस्कृति का सहज रूप है।

हिन्दी कथा–साहित्य में आँचलिकता के क्षेत्र में प्रसिद्धि प्राप्त साहित्यकार फणीश्वरनाथ रेणु का जन्म 4 मार्च 1921 ई० कौ औराही हिंगना नामक गाँव, पूर्णिया जिला, बिहार में हुआ था। रेणु जी के पिता शिलानाथ मण्डल राष्ट्रीय विचारधारा के व्यक्ति थे। रेणु जी की आरंभिक शिक्षा अररिया, फिर फारबिसगंज से हुई। रेणु जी पर समाजवादी आंदोलन का प्रभाव था। उनकी सक्रिया राजनीति जीवन का आरंभ बनारस से हुआ। रेणु जी लोकसंस्कृति के अराधक थे। उन्हें ग्रामीण संस्कृति, लोक संगीत, लोक नृत्य, रहन–सहन, रीति–रिवाज आदि से बहुत गहरा लगाव था और उसी लगाव को उन्होंने अपने रचनाओं में व्यक्त किया है। लोकगीत, लोककथाएँ, ढोल–मृदंग बजाना रेणु जी भालि–भाँति जानते थे।

रेणु जी ने बहुत–सी कहानियाँ लिखी है। इनकी प्रकाशित 'कहानी–संग्रह' निम्नलिखित है– (1) ठुमरी (1959 ई०), (2) आदिम रात्रि की महक (1967 ई०), (3) अग्निखोर (1973 ई०), (4) एक श्रावणी दोपहर की धूप (1984 ई०), 5 अच्छे आदमी (1986 ई०)। रेणु जी की प्रमुख कहानियाँ निम्नलिखित है– तीसरी कसम, लाल पान

की बेगम, तीन बिंदियाँ, रसप्रिया, पंचलाइट, ठेस, तबे एकला चलो रे, काक चरित, आजाद परिन्दे, अग्निखोर, अक्ल और भैंस, लफड़ा, संवदिया, रेखाएँः वृतचक्र भितिचित्र की मयूरी, शीर्षकहीन, एक अकहानी का सुपुत्र, कस्बे की लड़की, पुरानी कहानीः नया प्राठ आदि।

रेणु जी की कहानी 'तीसरी कसम' एक प्रसिद्ध कहानी है। इस कहानी पर इसी नाम से फिल्म भी बनी है। इस कहानी में रेणु जी ने प्रेम और त्याग को दर्शाया है। प्रस्तुत कहानी में उन्होंने ग्रामीण अँचल के लोकगीत, लोक संस्कृति को भी बेहद खुबसुरत तरीकें से दिखाया है। रेणु जी ने इस कहानी में गाँवो के बच्चों की मनोदशा को दर्शाया है कि किस प्रकार जब गाँवों में पर्दा लगा गाड़ी गुजरती है तब बच्चे कितने खुश होते है और दुल्हन को देखने के लिए गाड़ी के पीछे–पीछे दौड़कर गाना–गाने लगतें है जो द्रष्टव्य है–

''लाली लाली डोलियाँ में लाली रे दुल्हनियाँ''

इसी प्रकार 'तीसरी कसम' में रेणु जी ने बिहार के प्रचलित 'छोकरा नाच' का भी चित्रण किया है। इस नाच में युवको द्वारा युवतियों का वेश–भूषा धारण करके नाच दिखाया जाता है। रेणु जी ने इस नाच को इस कहानी के माध्यम से जीवित रखने का प्रयास किया है। इस कहानी में रेणु जी ने 'छोकरा नाच' के संबंध में लिखा है–

''छोकरा–नाच के गीत की याद आई हिरामन को–

सजनवा बैरी हो गय हमारो! सजनवा......!

अरे चिठिया हो तो सब कोई बाँचे, चिठिया हो तो...............

हाय! करमवा, होय करमवा......''

रेणु की 'रसप्रिया' कहानी विद्यापति के नाम पर गीत गाने वाले एक पंचकौड़ी मिरदंगिया की कहानी है। इस कहानी के माध्यम से रेणु जी ने एक मिरदंगिया के द्वारा दर्शाया है कि वह किस प्रकार अतीत में खो जाता है और अपनी लोक परम्पराओं और लोक गीतों को याद करता है। ये लोक परम्प्रा आज के जमाने में

कहीं–न–कहीं धुमिल होती जा रही है। रेणु जी एक ऐसे कथाकार थे जिन्हें अपनी लोकसंस्कृति, ग्रामीण जीवन, अपनी परम्पराओं से लगाव था। उन्हें अपनी लोकपरंपराओं की चिंता थी। इन्हीं परम्पराओं को बचाने के लिए उन्होंने इस कहानी में मिरदंगिया के माध्यम से उन परम्पराओं का चिंतन करते हुए लिखा है– ''रिमझिम वर्षा में बारहमासा, चिलचिलाती धूप में बिरहा, चाँचर और लगनी–

हाँ..........रे, हल जोत हलवाहा भैया रे........... ।

खुरपी रे चलावे..........म–ज–दू–र!

एहि पंथे, धरी मोरा हे रूसलि........ ।''

इस गीत के माध्यम से रेणु जी की संवेदना में ग्रामीण जीवन के 'श्रम गीत' जीवित हो उठते है। उन्होंने पंचकौड़ी मिरदंगिया के द्वारा इस कला को सुरक्षित करने का प्रयास किया है।

हिन्दी साहित्य में फणीश्वरनाथ रेणु को आँचलिक उपन्यास की शैली के माध्यम से ग्रामीण भारत की आवाज को बढ़ावा देने के लिए जाना जाता है। हिन्दी साहित्य में रेणु जी के उपन्यास इस प्रकार मिलते है– (1) मैला आँचल (1954), (2) परती–परिकथा (1957), (3) दीर्घतपा (1963), (4) जुलूस (1965), (5) कितने चौराहे (1966), (6) कलंकमुक्ति (1972), (7) पल्टूबाबू रोड (1979)। इन उपन्यासों में उन्होंने अपनी लोक संस्कृति, लोकगीत, लोक भाषा को मुख्य रूप से स्थान दिया है।

''मैला आँचल' फणीश्वरनाथ रेणु की ख्याति का आधार है। इसमें बिहार राज्य के पूर्णिया जिले के मेरीगंज गाँव को कथा का आधार बनाया गया है। 'मैला आँचल' को प्रेमचंद के उपन्यास 'गोदान' के बाद सबसे महत्वपूर्ण हिन्दी उपन्यास माना जाता है। इस उपन्यास में रेणु जी ने एक सुन्दर प्रसंग का उल्लेख किया है जहाँ स्वराज की खुशी में ग्रामीणों द्वारा उत्सव मनाने से संबंधित गीतों का बहुतायत से प्रयोग किया है। आजादी का जश्न मनाने के दौरान उजाड़ूदास द्वारा 'सुराजी कीर्तन का गीत' उस समय के राजनीतिक स्थितियों का सजीव चित्र उपस्थित करती है–

''कथि जे चढ़िये आयेल

भारथमाता

कथि जे चढ़ल सुराज

चलु सखी देखन को

कथि जे चढ़िये आयेल

वीर जमाहिर

कथि पर गंधी महराज। चलु सखी......

हाथी चढ़ल आवे भारत माथा

डोली में बैठल सुराज। चलु सखी देखन को

घोड़ा चढ़िये आये वीर जमाहिर

पैदल गंधी महराज। चलु सखी देखन को।''

उन्होंने ग्रामीण जीवन, प्रेम, सामाजिक, राजनीतिक मुद्दों को गीतों के माध्यम से प्रस्तुत किया है। प्रस्तुत गीत के द्वारा रेणु जी ने गाँधी जी और ज्वाहरलाल नेहरू जी का गुणगान किया है।

'मैला आँचल' का एक प्रसंग जिसमें रेणु जी ने एक गीत के माध्यम से कमली के मनःस्थिति का पता लगाया है। रेणु जी लिखते है–

''अब आप सविता देवी से एक मैथिली लोकगीत सुनिए।''

माइगे, हम ना बियाहेब अपन गौरा के

जौं बुढ़वा होइल जमाय गे माई!

''ओ माँ।'' कमला खिलखिलाकर हँस पड़ती है,

''शादी का गीत हो रहा है।''

प्रस्तुत लोकगीत में गौरा अर्थात् पार्वती जी की माँ भगवान शिव जी की वेश–भूषा देखकर डर जाती है और कहती है कि अपनी गौरा का विवाह ऐसे शिव से नहीं करेंगे जो बूढ़ा हो। कमली की भी यही स्थिति रही है और रेणु जी ने उस स्थिति को एक सुन्दर लोकगीत के माध्यम से उपस्थित किया है। उन्होंने 'मैला

आँचल में स्त्री पात्रों के मनोभावों को प्रकट करने के लिए सुन्दर लोकगीतों का प्रयोग किया है।

अतः सम्पूर्ण विवेचन के बाद पता चलता है कि रेणु जी की संगीत की सभी विधाओं में गहराई से पैठ थी इसका वर्णन उनकी कहानियों और उपन्यासों में बखूबी देखने को मिलता है। उन्होंने अपने कथा–साहित्य में क्षेत्रीय आवाजों को मुख्य रूप से स्थान दिया है।

रेणु जी ने अपनी रचनाओं में ग्रामीण भाषा, लोकगीत, लोकोक्ति, मुहावरा आदि का प्रयोग किया है जिससे उनकी रचना और भी प्रमाणिक हो जाती है। उनकी भाषा सहज, संवेदनशील संप्रेषणीय एवं भाव प्रधान हैं। उन्होंने अपने कथा–साहित्य में भाषा का, गीतों का प्रयोग पात्र व परिवेश के अनुकूल किया है। गीतों के इस स्वरूप को उनके कथा–साहित्य में देखा जा सकता है। रेणु जी ने अपनी रचनाओं में ग्रामीण जीवन का गहन रागात्मक और रसमयी चित्र खींचा है।

फणीश्वरनाथ रेणु को साहित्य और शिक्षा में महत्वपूर्ण योगदान देने के लिए भारत सरकार द्वारा वर्ष 1970 में प्रतिष्ठित 'पद्म श्री' पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। रेणु जी की याद में वर्ष 2016 में भारतीय डाक विभाग द्वारा एक स्मारक डाक–टिकट जारी किया गया था।

इस प्रकार हमें ज्ञात होता है कि रेणु जी की सभी रचनाओं में लोकगीत भरे पड़े है। रेणु जी ने गीतों का प्रयोग कहीं वातावरण के लिए तो कहीं पात्रों के मनोभावों को व्यक्त करने के लिए किया है। उनके द्वारा लिखे गए गीत सिर्फ गीत नहीं है बल्कि हमारे सामाजिक, सांस्कृतिक धरोहर है। गीतों के माध्यम से अपने विचारों, भावों को उन्होंने बहुत ही अच्छे ढंग से अपनी रचनाओं में पिरोया है। उन्होंने अपने गीतों के माध्यम से जनजीवन का दर्द ही नहीं व्यक्त किया वरन् अपने भीतर घुटते विद्रोह को भी स्वर दिया है।

उपरोक्त विवरण के आधार पर ही मैंने अपने शोध का विषय 'फणीश्वरनाथ रेणु के कथा–साहित्य में गीतों की सार्थकता : एक अध्ययन' चुना है। इस शोध के

माध्यम से रेणु जी की रचनाओं में चित्रित गीतों की सार्थकता पर विचार किया जाएगा। इस शोध के द्वारा रेणु जी उन सभी पहलुओं पर विचार किया जाएगा जो समाज में व्याप्त लोकगीतों, लोकसंस्कृति और लोकभाषा को एक नवीन और मौलिक दृष्टि प्रदान कर सकें।

शोध की प्रेरणा :

मेरी रूचि कथा–साहित्य में अधिक रही है यही कारण है कि मैंने कथा–साहित्य पर शोध कार्य करने का विचार बनाया। मैं जब स्नातकोत्तर की पढ़ाई और नेट की तैयारी कर रही थी तब मैंने फणीश्वरनाथ रेणु के कुछ रचनाओं का रसास्वादन किया था। उनकी सभी रचनाओं में मुझे प्रायः गीत बहुत पसंद आये। उन गीतों के बारे में जानने की इच्छा उत्पन्न हुई। उनके द्वारा रचित 'त्तीसरी कसम' की कथाओं और गीतों को फिल्मी दुनिया में स्थान मिला था। उन्होंने साहित्य में गीतों को स्थापित करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। रेणु जी अँचल क्षेत्र के प्रमुख लेखक रहे है इसलिए प्रायः उनकी रचनाओं में लोकसंस्कृति, राजनीति, सामाजिक, रीति–रिवाज, रहन–सहन, आचार–व्यवहार, ऐतिहासिक आदि गीत प्रतीक एवं रहस्य के रूप में मिलते है। इन्ही प्रतीकों और रहस्य को जानने की इच्छा मुझमें उत्पन्न हुई। इस संबंध में मैंने अपने गुरू जी 'डॉ० रामईश्वर कुमार साही' से बातचीत की फिर उन्होंने मुझे सुझाव दिया कि रेणु जी के गीतों पर शोध कार्य किया जा सकता है। इस प्रकार इस शोध–प्रबंध की प्रेरणा मुझे मेरे गुरू जी और साहित्य से मिली।

शोध का महत्व :

शोध मूल रूप से ज्ञान को आगे बढ़ाने, समस्याओं का समाधान करने और समाज को बेहतर बनाने में सहायता करता है। इस संदर्भ में मेरे द्वारा किये जा रहे शोध में हमारी संस्कृति, लोकगीत, लोकजीवन, लोकभाषा, इतिहास और सामाजिक जीवन को दर्शाना और साथ–ही–साथ लोगों को आपस में जोड़ना और उनकी पहचान को बनाए रखने का प्रयास करना है।

फणीश्वरनाथ रेणु के कथा–साहित्य के द्वारा हम यह जानने, का प्रयास करेंगे कि किस प्रकार उन्होंने लोकगीतों को जीवित रखने के लिए अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनकी रचनाओं में वर्णित गीतों का क्या अर्थ है? उन गीतों का समाज में क्या प्रभाव पड़ा और वह किस प्रकार लोगों की भावनाओं से जुड़ी है? उनके कथा–साहित्य के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया जाएगा कि कोई भी गीत किसी समुदाय की संस्कृति, रीति–रिवाज, सामाजिक, ऐतिहासिक कहानियों से जुड़ी होती है और वह आने वाली पीढ़ियों को संदेश पहुँचाती है। इसके साथ ही रेणु जी के कथा–साहित्य में लोकगीतों ने स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान साहित्य को किस प्रकार प्रभावित किया है इसे व्यापक रूप में दर्शाना इस शोध की भूमिका रहेगी।

शोध का उद्देश्य :

किसी भी कार्य को करने के पीछे एक शाधार्थी का कोई–न–कोई उद्देश्य अवश्य होता हैं। वह अपने शोध या अन्वेषण द्वारा किसी समस्या का समाधान करने का प्रयास करता है। मूल रूप से शोध का उद्देश्य नवीन तथ्यों की खोज करना, उपलब्ध ज्ञान को सत्यापित करने का प्रयास करना होता है।

मैंने 'फणीश्वरनाथ रेणु के कथा–साहित्य में गीतों की सार्थकता : एक अध्ययन' को शाध का विषय बनाया है। प्रस्तुत शोध के अंतर्गत रेणु जी के लोकसंस्कृति, लोकभाषा, लोकजीवन को सहज एवं सरल भावों में व्यक्त करने का प्रयास किया जाएगा इस शोध का उद्देश्य वर्त्तमान समाज में लोक का चरित्र पेश करना, गीतों की भावनाओं को समझना, लोकगीतों के प्रति जागरूकता फैलाने का प्रयास है। साथ ही कथा–साहित्य में रेणु जी के योगदान को उजागर करते हुए सकारात्मक और नकारात्मक पक्ष को ध्यान में रखा जाएगा।

इस प्रकार प्रस्तुत शोध–प्रारूप का मुख्य उद्देश्य समाज के संदर्भ में लोकगीतों से जुड़ी संस्कृति, रीति–रिवाज, रहन–सहन, तीज–त्योहार, खुशी, प्रेम, सुख–दुख और उनके जीवन से जुड़ी भावनाओं को उजागर करने का प्रयास है। प्रस्तुत शोध कार्य समाज को एक नयी दृष्टि प्रदान करने का प्रयास करेगी।

शोध की प्रासंगिकता :

प्रस्तुत शोध कार्य हिन्दी साहित्य में आँचलिकता के क्षेत्र में प्रसिद्धि प्राप्त 'फणीश्वरनाथ रेणु के कथा–साहित्य में गीतों की सार्थकता : एक अध्ययन' पर केंन्द्रित है। रेणु जी बीसवीं सदी के प्रसिद्ध आँचलिक साहित्यकार रहे है। रेणु जी का जीवन लोकसंस्कृति से जुड़ा हुआ था। लोकसंस्कृति से जुड़ा उनका जीवन हमें अपनी संस्कृति के प्रति प्रेरित करता है। गाँव का रहन–सहन, गाँव के लोगों से मेलजोल, गाँव के रीति–रिवाज, गाँव की राजनीति से उनका गहरा लगाव था। यही कारण है कि उनकी रचनाओं में ग्रामीण क्षेत्र के रहन–सहन, रीति–रिवाज, राजनीति सहज एवं प्रमाणिक रूप में दिखाई पड़ते है।

रेणु जी भारत के लोकगीतों और लोकसंस्कृति को जीवित रखने वाले रचनाकार रहे हैं। आज उनकी रचनाओं का महत्व इसलिए है क्योंकि वे अपनी बातों को सच्चाई और प्रमाणिक रूप में पाठकों के सामने रखते है। रेणु जी ने अपने कथा–साहित्य के माध्यम से लोकगीतों और लोकसंस्कृति को सुरक्षित रखने का प्रयास किया है। जो आज के आधुनिक जीवन में कहीं–न–कहीं विलुप्त होती जा रही है। आज के इस युग में श्रम गीत, ऋतु गीत, हलवाहे व गाड़ीवानों के गीत, विवाह गीत, सोहर गीत आदि जैसे पारम्परिक गीत लुप्त होते जा रहे हैं। कुछ गीत बचे भी है पर उनमें भी भयंकर ह्रास आया है। जैसे–गवना, भोर जगाने, परिछन, ब्याह आदि गीत लोग भूलते जा रहे है। इन गीतों को बचाये रखना हमारा कर्त्तव्य है। इन लोकगीतों से हम अपनी भाषा, संस्कृति और इतिहास से परिचित होंगे और इसके प्रति हमारी जागरूकता बढ़ेगी।

रेणु जी के रचनाओं में प्रस्तुत गीत समाज की भावनाओं, सुख–दुख, संघर्ष, नैतिकता, न्याय, प्रेम, राजानीति, लोगों की एकता और सह–अस्तित्व जैसे मूल्यों को उजागर करती है। प्रस्तुत शोध द्वारा रेणु जी के कथा–साहित्य में जो गीत उपस्थित है वह किस प्रकार आधुनिक युग में लोकगीतों की प्रासंगिकता बनाए रखती है एवं सांस्कृतिक विविधता को बढ़ावा देती है और उसे लोगों की आत्मीयता से जोड़ती है इसे प्रदर्शित करना है। लोकगीतों की प्रासंगिकता आज भी महत्वपूण रही है क्योंकि

वह समाज की भावनाओं, परंपराओं, रीति–रिवाजों और जीवन शैली को चित्रित करती है। लोकगीत आज भी अपनी प्रासंगिकता बनाए हुए है।

शोध–कार्य की उपादेयता :

उपादेयता का अर्थ–उपयोगिता, महत्व और लाभ है। शोध, ज्ञान और समझ बढ़ाने, समस्या का समाधान और नवीन चीजों की खोज करने में सहायक होता है और उससे सामाजिक, आर्थिक और वैज्ञानिक प्रगति होती है। प्रस्तुत शोध विषय 'फणीश्वर नाथ रेणु के कथा–साहित्य में गीतों की सार्थकताः एक अध्ययन' के द्वारा से गीतों, लोकगतों, लोकसंस्कृति ग्रामीण जीवन आदि लोक परंपराओं को उजागर करने का प्रयास किया जाएगा। इस शोध कार्य की उपादेयता यह रहेगी की आने वाले हिन्दी के पाठकों के समक्ष फणीश्वरनाथ रेणु के गीतों की सार्थकता के बारे में बारीकी से जान सके। रेणु जी ने गीतों के माध्यम से बहुत सारी बातों को बड़े ही रोचक रूप में रखा है। रेणु जी गीतों के माध्यम से अपनी संस्कृति को जोड़कर देखते है।

शोध–पद्धति :

किसी विशिष्ट शोध विषय के बारे में जानकारी प्राप्त करना और उसका विश्लेषण करने में प्रयोग किए जाने वाले तकनीकों और प्रक्रियाओं का वर्णन व्यवस्थित रूप में करना ही शोध–पद्धति कहलाता है। शोध–पद्धति एक व्यवस्थित योजना है जिसके द्वारा शोधार्थी अपने शोध के उद्देश्य को पूरा करता है। शोध समस्या को हल करने के लिए एक शोधार्थी तार्किक और व्यवस्थित तरीका अपनाता है। प्रस्तुत शोध में फणीश्वरनाथ रेणु के कथा–साहित्य को आधार ग्रंथ के रूप में लिया जाएगा। शोध कार्य करने में अनेक पद्धतियाँ प्रचलन में है। इस शोध कार्य में निम्नलिखित पद्धतियों का प्रयोग किया जाएगा–

1. समाजशास्त्रीय अध्ययन पद्धति :इस पद्धति के माध्यम से रेणु जी के कथा–साहित्य में वर्णित सामाजिक तत्वों, सामाजिक परिवेश के साथ–साथ नैतिक और दार्शनिक तत्वों का अध्ययन किया जाएगा।

2. वैज्ञानिक पद्धति : इस पद्धति के द्वारा रेणु जी और उनके रचनागत पात्रों की अंतर्चेना का मनोवैज्ञानिक अध्ययन किया जाएगा।

3. क्षेत्रीय अध्ययन पद्धति : इस पद्धति के द्वारा रेणु जी की कथा–साहित्य में अंचल क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के जीवन पर भौगोलिक और सामाजिक कारकों को समझने का प्रयास किया जाएगा।

4. भाषा या शैली वैज्ञानिक पद्धति : इस पद्धति के गाध्यम से रेणु के कथा–साहित्य में वर्णित भाषा और शैली की संरचना का अध्ययन और विश्लेषण किया जाएगा।

5. विवेचात्मक पद्धति : इस पद्धति के द्वारा रेणु जी के लोगीतों पर गहन अध्ययन और विश्लेषण किया जाएगा और उसके विभिन्न पहलुओं को समझने और उनके बीच के संबंधो को स्पष्ट करने का प्रयास किया जाएगा।

6. विवरणात्मक पद्धति : इस पद्धति के द्वारा रेणु जी के कथा–साहित्य में चित्रित घटना या स्थिति का विस्तृत और सटीक विवरण बिना किसी परिवर्त्तन के प्रस्तुत किया जाएगा।

7. तुलनात्मक पद्धति : इस पद्धति के द्वारा रेणु जी के समकालीन लेखको के रचनाओं और प्रवृत्तियों का अध्ययन किया जाएगा। रेणु जी पर किए गए आलोचनात्मक मतों और विचारों का तुलनात्मक अध्ययन किया जाएगा।

इस शोध–कार्य में इंटरनेट, वेबसाइट, ब्लोग, पत्र–पत्रिका, पुस्तकालय इत्यादि से प्राप्त सामग्रियों की सहायता ली जाएगी।

प्रस्तुत शोध–कार्य में रेणु जी की सभी रचनाओं का गहन अध्ययन और विश्लेषण किया जाएगा। इस प्रकार अंत में सम्पूर्ण शोध–कार्य का निष्कर्ष भी दिया जाएगा।

पूर्वानुसंधान :

प्राप्त जानकारी के अनुसार शोध–कार्य के रूप में अभी तक फणीश्वरनाथ रेणु के साहित्य में निम्नांकित कार्य हो चुके है :–

1. फणीश्वरनाथ रेणु की कहानियों में लोक–वेदना, रंजना, राँची विश्वविद्यालय, राँची 2015
2. फणीश्वरनाथ रेणु के कहानियों में लोक–जीवन, कुमारी ममता, विनोबा भावे विश्वविद्यालय, 2020
3. आँचलिक उपन्यास और फणीश्वरनाथ रेणु, उपाध्याय सत्यनारायण, काशी हिन्दु विश्वविद्यालयख् वाराणसी, 1978
4. फणीश्वरनाथ रेणु के कथा–साहित्य में सामाजिक यथार्थ, मदनलाल, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, 2009
5. फणीश्वरनाथ रेणु के कथा–साहित्य का लोकतात्विक अध्ययन, उपाध्याय हृदयनारायण, महात्मा गाँधी विद्यापीठ, 1993
6. फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यासों में व्यक्ति और परिवेश, सोनकर पूजा, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी 2018
7. फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यासों में सामाजिक राजनीतिक चेतना, तमता रेखा, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, 2024
8. हिन्दी कथा–साहित्य की प्रगतियात्रा में फणीश्वरनाथ रेणु का योगदान, सिंह मिथिलेश, छत्रपति साहुजी महाराज विश्वविद्यालय, 1992
9. फणीश्वरनाथ रेणु के कथा–साहित्य में आँचलिक युवा शक्ति, सूर्याकांत शर्मा, महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, 2003
10. फणीश्वरनाथ रेणु के कथा–साहित्य में जाति विमर्श, सिंह सत्यप्रकाश, दिल्ली विश्वविद्यालय, 2010

अन्वेषण कार्य हेतु अध्यायीकरण :

प्रस्तावना :

प्रथम अध्याय : फणीश्वरनाथ रेणु का व्यक्तित्व और कृतित्व

(क) फणीश्वर नाथ रेणु का व्यक्तित्व

(ख) फणीश्वर नाथ रेणु का कृतित्व

द्वितीय अध्याय : फणीश्वरनाथ रेणु और उनकी युगीन परिस्थितियाँ

(क) राजनीतिक परिस्थितियाँ

(ख) सामाजिक परिस्थितियाँ

(ग) आर्थिक परिस्थितियाँ

(घ) धार्मिक परिस्थितियाँ

(ङ) सांस्कृतिक परिस्थितियाँ

तृतीय अध्याय : आँचलिकता की अवधारणा और फणीश्वरनाथ रेणु

(क) आँचलिक साहित्य का उद्‌भव और स्वरूप

(ख) फणीश्वरनाथ रेणु और आँचलिक साहित्य में संबंध

(ग) फणीश्वरनाथ रेणु की कहानियों में आँचलिकता का प्रभाव

(घ) फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यासों में आँचलिकता का प्रभाव

चतुर्थ अध्याय : फणीश्वरनाथ रेणु की कहानियों में गीतों की सार्थकता

(क) 'ठुमरी' कहानी–संग्रह में गीतों की सार्थकता

(ख) 'आदिमरात्रि की महक' कहानी–संग्रह में गीतों की सार्थकता

(ग) 'अग्निखोर' कहानी–संग्रह में गीतों की सार्थकता

(घ) 'एक श्रावणी दोपहर की धूप' कहानी–संग्रह में गीतों की सार्थकता

(ङ) 'अच्छे आदमी' कहानी–संग्रह में गीतों की सार्थकता

पंचम् अध्याय : फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यासों में गीतों की सार्थकता

(क) 'मैला आँचल' उपन्यास में गीतों की सार्थकता

(ख) परती परिकथा उपन्यास में गीतों की सार्थकता

(ग) दीर्घतपा (कलंकमुक्ति) उपन्यास में गीतों की सार्थकता

(घ) जुलूस उपन्यास में गीतों की सार्थकता

(ङ) कितने चौराहे उपन्यास में गीतों की सार्थकता

पष्ठ अध्याय : फणीश्वरनाथ रेणु के कथा–साहित्य में भाषा और शिल्प

(क) फणीश्वरनाथ रेणु की कहानियों में भाषा

(ख) फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यासों में भाषा

(ग) फणीश्वरनाथ रेणु की कहानियों में शिल्प

(घ) फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यासों में शिल्प

उपसंहार

संदर्भ ग्रंथ सूची

वेब/इंटरनेट

संदर्भ ग्रंथ सूची :

(क) आधार ग्रंथ सूची

1. रेणु फणीश्वरनाथ, मैला आँचल, राजकमल प्रकाशन, 1954
2. रेणु फणीश्वरनाथ, परती–परिकथा, राजकमल प्रकाशन, 1957
3. रेणु फणीश्वरनाथ, दीर्घतपा, राजकमल प्रकाशन, 1963
4. रेणु फणीश्वरनाथ, जुलूस, राजकमल प्रकाशन, 1965
5. रेणु फणीश्वरनाथ, कितने चौराहे, अनुपम प्रकाशन, 1979
6. रेणु फणीश्वरनाथ, ठुमरी, राजकमल प्रकाशन, 1959
7. रेणु फणीश्वरनाथ, आदिमरात्रि की महक, राजकमल प्रकाशन 1967
8. रेणु फणीश्वरनाथ, अग्निखोर, राजकमल प्रकाशन, 1973
9. रेणु फणीश्वरनाथ, एक श्रावणी दोपहर की धूप, राजकमल प्रकाशन, 1984
10. रेणु फणीश्वरनाथ, अच्छे आदमी, राजकमल प्रकाशन, 1986

(ख) सहायक ग्रंथ सूची :

1. पालीवाल सूरज, फणीश्वरनाथ रेणु का कथा–संसार राजधानी ग्रंथाकार, संस्करण, 1996
2. गुप्ता डॉ० ज्ञानचन्द, आँचलिक उपन्यासः संवेदना और शिल्प, अभिनव प्रकाशन, प्रमथ संस्करण–1975
3. बहल डॉ० रश्मि, फणीश्वरनाथ रेणु और सतीनाथ भादुड़ी के उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन, सूर्य प्रकाशन, 1992
4. कुमार डॉ० सुवास, आँचलिकता, यथार्थवाद और फणीश्वरनाथ रेणु, साहित्य सहकार प्रकाशन, 1998
5. तिवारी डॉ० अंजलि, फणीश्वरनाथ रेणु का साहित्य, श्रृषभचरण जैन एवं सन्तति प्रकाशन, 1983
6. सोफ्ट कुसुम, फणीश्वरनाथ रेणु की उपन्यास कला, वसुमती प्रकाशन, 1978
7. मधुरेश, मैला आँचल का महत्व, सुमित प्रकाशन, 2000

नोट :– आवश्यकतानुसार शोध प्रारूप की रूपरेखा में बदलाव किया जा सकता है।